संपादक के नाम

मीडिया के नए संदर्भों के स्थान मिले

आपने इस पत्रिका की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए मुझसे कुछ सुझावों की अपेक्षा की है। पत्रिका मीडिया के अधिकतर सदंर्भो को छूती है। इसमें यदि मीडिया के अधुनातन वाहन जैसे मोबाइल टी.वी.आई.पी.टी.वी. वेब पत्रिकारिता को स्थान मिल सके तो विद्यार्थी अधिक लाभान्वित होंगे। 'मीडिया मीमांसा' अपने घोषित और अघोषित-दोनों ही उद्देश्यों को पूरा करने में समर्थ हो , यह मेरी शुभकामना है।

लीलाधर मंडलोई,
महानिदेशक, प्रसार भारती, नई दिल्ली

पत्रकारिता का आत्मदीप

'मीडिया मीमांसा' का प्रवेशांक पत्रकारिता के इतिहास में पहली बार उसके प्रसार-विकास, संगति-विसंगति, लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ बनने की उसकी योग्यता, उसकी बहुमुखी संभावनाओं और उसकी अनेक मुखी सीमाओं का गहराई से विवेचन और आकलन लेकर आत्मदीप की तरह हिंदी संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस पत्रिका का स्वागत करते हुए हम पत्रिका के संपादक को साधुवाद देते हैं। पत्रिका में नारायणदत्त जी ने अपने निबंध में हिन्दी को 'एक स्वतंत्र और विकसित भाषा' माना है। जिसका अपना शब्द भंडार, मुहावरा, व्याकरण और वाक्य रचना विधान है। उसकी अपनी खनक, चमक और महक है। अहिन्दी भाषी नारायणदत्त जी ने हिन्दी भाषा को जो पहचान दी है वह हिन्दी गद्य के जन्मदाता भारतेन्दु जी की याद दिला देता है। नारायणदत्त जी के विचारों से सौ फीसदी सहमत होते हुए भी मैं हिन्दी के संस्कृत भाषा की सगी बेटी होने की बात से असहमत हूँ। वस्तुत: भारतीय आर्यभाषा के विकास की दृष्टि से हिन्दी अपभ्रंश की बेटी है न की संस्कृत भाषा की बेटी।

डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक
प्रतिष्ठित हिन्दी विद्वान, गाजीपुर

गंभीर है पत्रिका

आपने पत्रिका के आलेखों को नया आयाम दिया है। मैं आपकी जीवत्ता का कायल हूँ, इससे इतनी ताकत और संतोष होता है कि बयान नहीं कर सकता। पत्रिका गंभीर है। योजना बनाना और उसे मूर्त- करना आज के समय में चमत्कार जैसा है।

कर्मेन्दू शिशिर, पटना

अलग पहचान

'मीडिया मीमांसा' का दूसरा अंक मिला। अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व को देखते हुए विचार सूत्र के रूप में गांधी जी के दीक्षांत भाषण का अंश बहुत अच्छा लगा। आपने अपने संपादकीय में जो मुद्दे उठायें हैं, उनके अलावा साईंनाथ के संदर्भ में यह कहना और भी अच्छा है कि मीडिया पर बाजारवाद के बढ़ते शिकंजे के बावजूद गरीबों और वंचितों के दर्द को शब्द देकर भी कोई पत्रकार अपनी पृथक पहचान बना सकता है। इस अंक में पृष्ठ 45 पर श्रीरंजन सूरिदेव ने आचार्य शिवपूजन सहाय और नलिन विलोचन शर्मा के प्रसंग में जिस घटना का उल्लेख किया है, वह दर-असल 'रुझान' शब्द को लेकर दोनों में चर्चा हुई थी, 'सम्मान शब्द को लेकर नहीं। 'रुझान' अरबी का पुल्लिंग शब्द है। नलिन जी ने साहित्य त्रैमासिक में अपने एक लेख में उस शब्द का स्त्रीलिंग में प्रयोग कर दिया था। 'मीडिया मीमांसा' क्या श्रीरंजन सूरिदेव के लेख में प्रयुक्त 'रुझान' शब्द को 'सम्मान' पढ़ गया। पिछले अंक में मुद्रण की कई भूलें थीं और 'मैटर' प्रस्तुतीकरण की भी।

रामशंकर द्विवेदी, उरई

पत्रिका पत्रकारिता पाठ्यक्रम के योग्य

'मीडिया मीमांसा' के दोनों अंक मिले। आपके कौशल के साथ आपकी अभिरूचि का पता बताते हैं। श्री नारायण दत्त जी की पुस्तक पर कृष्णबिहारी मिश्र ने पुस्तक की गरिमा के अनुकूल समीक्षा की है। नारायण दत्त जी का आलेख एक मूल्यवान दस्तावेज है। ये दोनों अंक पत्रकारिता पाठ्यक्रमों में पढ़ाये जाने योग्य हैं।

रामदेव शुक्ल
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

I have gone through the two issues of "Media Mimansa"- "Media Critique". Reflecting professional fervour, they are indeed impressive publications. This is, perhaps, the only media magazine of its kind published in India. Congratulations.

Harihar Swarup
Former Chief, Delhi Bureau, PTI

I am very much impressed by the way this magazine has been edited and designed. The team has highlighted the correct points in the boxes and they have used relevant pictures.

Dr. Gloria Khamkar
Department of Communication and Journalism,
University of Pune, Pune